बाल किलकारी

वर्ष - 2, अंक-4
मूल्य 10/-

अप्रैल 2016

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

किलकारी लाल

नया-नया है सबकुछ, नई सोच, नई उमंग है।
बचपन की यादों में तो, छिपा खुशियों का रंग है।

प्यारे दोस्तो,

परीक्षा खत्म हो गई। ऐसा लग रहा है, मानो दिल से एक बड़ा बोझ उतर गया हो। सबकुछ नया लग रहा है न! अब नयी किताबें, नया वर्ग, नयी ड्रेस, कुछ नये शिक्षक। कितना अच्छा लगता है सबकुछ नयी-नयी चीजों को देखकर। मन में एक उल्लास, एक खुशी होती है। हमारी इस खुशी में मौसम भी बड़ा खुशनुमा हो जाता है। सारी दुनिया नयी-सी लगने लगती है-नये फूल, नई सब्जियाँ, नये पत्ते और सबसे मज़े की बात पेड़ों में टिकोले इसी समय लगते हैं, जिन्हें तोड़कर खाने का अपना अलग ही मज़ा है।

यहीं से गर्मी की शुरुआत भी हो गयी है। थोड़ी-थोड़ी कड़ी धूप उगने लगी है और हमलोग पीने के लिए ठंडे पानी की तलाश में रहते हैं। सारे दोस्त उस आम के बगीचे में जाते और ढेर सारी मस्ती करते। मस्ती से याद आया-मूर्ख दिवस। इसे कैसे भूल सकते हैं?कितना मज़ा आता है न एक-दूसरे को मूर्ख बनाने में ?किसी को नहीं छोड़ते, भईया, दीदी, अपना प्यारा साथी, यहाँ तक कि हम अपने शिक्षकों को भी मूर्ख बना देते हैं। थोड़ा गुस्सा होते हैं लेकिन वो भी कुछ देर के लिए बच्चे बन जाते हैं। आखिर उन्हें भी याद आ ही जाती हैं दो बचकानी मस्तियाँ। वे सारे पलों से गुजर चुके हैं।

पर दोस्तो, इतनी सारी मस्तियों के बाद थोड़ा सोचने का वक्त आता है। जिनसे हमें हरदम प्यार मिलता है, जो हमारी हर ख्वाहिश को पूरी करते हैं, सारी अपेक्षाओं को पूरा करते हैं, जिन्होंने हमें जन्म दिया। हाँ सही समझा। हमारे माता-पिता आजकल थोड़े उदास-से रहने लगे हैं । उनके चेहरे पर अब वो खुशी नहीं झलकती। शायद उनकी कुछ अपेक्षा पूरी न हो पा रही हो ?दोस्तो, हमारी जो अपेक्षाएँ होती हैं, वे हर समय उनको पूरा करने की कोशिश करते हैं, लेकिन उनकी अपेक्षा अधूरी ही रह जाती हैं। क्यों ?थोड़ा हमें इन बातों पर ध्यान देना चाहिए। शायद हम आजकल मन लगाकर पढ़ाई न कर रहें हो ? दिनभर सिर्फ मस्तियाँ ही कर रहे हों ?

दोस्तो, हमारे माता-पिता चाहते हैं कि हम पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बनें, उनकी बातों को मानें। हमें अब मन लगाकर पढ़ना-लिखना होगा। माता-पिता की उन सारी अपेक्षाओं को पूरा करना होगा, जिनसे उनकी खोयी हुई मुस्कुराहट फिर से वापस आ जाए और वे हमेशा खुश रहें। तो दोस्तो, हम अपने माता-पिता के लिए इतना तो कर ही सकते हैं न!

सम्राट समीर

प्रेरक प्रसंग

एक बार गौतम बुद्ध से अभय राजकुमार ने एक 'उभय' प्रश्न किया। 'उभय' प्रश्न वह होता है, जिसका उत्तर न तो 'हाँ' में दिया जा सकता है और न 'नहीं' में। जैसे यदि कोई किसी से प्रश्न करे, "क्या तुमने चोरी करना बंद कर दिया है?" तब यदि उत्तर देनेवाला ''हाँ'' कहे, तो इसका यह अर्थ होगा कि वह पहले चोरी करता था। और यदि वह 'नहीं' कहे, तो इसका यह अर्थ निकलता कि अब भी चोरी करता है।

अभय ने जो प्रश्न किया, वह यह था, "क्या श्रमण गौतम कभी कठोर वचन कहते हैं?" उसने सोच रखा था कि 'नहीं' कहने पर वह बताएगा कि एक बार उन्होंने देवदत्त को 'नारकीय' (नरकगामी) कहा था, और यदि 'हाँ' कहें, तो उनसे पूछा जा सकता है कि जब आप स्वयं कठोर शब्दों का प्रयोग करने से स्वयं को रोक नहीं पाते, तब दूसरों को ऐसा उपदेश कैसे देते हैं? बुद्धदेव ने अभय के प्रश्न का आशय जान लिया। उन्होंने कहा, "इसका उत्तर न तो 'हाँ' में दिया जा सकता है और न 'नहीं' में।"

अभय राजकुमार की गोद में उस समय एक छोटा बालक था। उसकी ओर इशारा करते हुए बुद्धदेव ने पूछा, "राजकुमार, यदि दाई के अनजाने में यह बालक अपने मुख में काठ का टुकड़ा डाल ले, तब तुम क्या करोगे?"

"मैं उसे निकालने का प्रयास करूँगा।"

"यदि वह आसानी से न निकल सकता हो तो?"

"तो बायें हाथ से उसका सिर पकड़कर दाहिने हाथ की उँगली को टेढ़ा करके उसे निकालूँगा।'

"यदि खून निकलने लगे तो?"

"तो भी मेरा यही प्रयास रहेगा कि वह काठ का टुकड़ा किसी-न-किसी तरह बाहर निकल आए।"

"ऐसा क्यों?"

"इसलिए कि भन्ते, इसके प्रति मेरे मन में अनुकम्पा है।"

"राजकुमार, ठीक इसी तरह तथागत जिस वचन के बारे में जानते हैं कि यह मिथ्या या अनर्थकारी है और उससे दूसरों के हृदय को ठेस पहुँचती है, तब उसका वे कभी उच्चारण नहीं करते। पर इसी तरह जो वचन उन्हें सत्य और हितकारी प्रतीत होते हैं तथा दूसरों को प्रिय लगते हैं, उनका वे सदैव उच्चारण करते हैं। इसका कारण यही है कि तथागत के मन में सभी प्राणियों के प्रति अनुकम्पा है।"

प्रस्तुति-धुँधरू आनंद

विशेष कविता

कोयल

देखो कोयल काली है,
पर मीठी इसकी बोली,
इसने ही तो कूक-कूक कर
आमों में मिसरी घोली।
कोयल ! कोयल ! सच बतलाना,
क्या संदेशा लाई हो ?
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाल पर आई हो।
क्या गाती हो, किसे बुलाती,
बतला दो कोयल रानी!
प्यासी धरती देख माँगती
हो क्या मेघों से पानी?
कोयल! यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है?
माँ ने ही क्या तुमको मीठी
बोली यह सिखलाई है?
डाल-डाल पर उड़ना, गाना
जिसने तुम्हें सिखाया है,
सबसे मीठे-मीठे बोलो,
यह भी तुम्हें बताया है।
बहुत भली हो, तुमने माँ की
बात सदा ही है मानी,
इसीलिये तो तुम कहलाती हो
सब चिड़ियों की रानी।

-सुभद्रा कुमारी चौहान

माथापच्ची

बबलू ने बबली को जन्म-दिन में उसे गिफ्ट दिया और कहा- भूख लगे तो खा लेना, प्यास लगे तो पी लेना, और ठंड लगे तो जला लेना।'' बोलो गिफ्ट क्या है ?

हरियाली

इतनी सुन्दर, इतनी प्यारी
देखो यह हरियाली है।
डाल-डाल पर बैठी कोयल,
गाती बड़ी निराली है
हरियाली है ऐसी कि
देखो तो मन लुभाये।
आम, पपीता, लीची देखकर।
सबका मन ललचाये।
यहाँ हरियाली, वहाँ हरियाली।
हर तरफ ही हरियाली है।
मीठे-मीठे गाने गाती।
देखो कोयल काली है।

सन्नी कुमार

परीक्षा का परिणाम

करके अपने सारे काम,
गयी देखने मैं परीक्षा-परिणाम
मन में था डर भयंकर,
बोर्ड में आया पहला नम्बर।
नम्बर बड़े अच्छे आये,
खुशी से दिल झूमे-गाये।
गाने को दिल बोल रहा,
मस्ती में दिल डोल रहा।
खूब करें शैतानियाँ,
मन मेरा शैतान।
नयी-नयी किताबों को देख,
मैं थी बेताब, परेशान।
किताबों से दोस्ती कर,
मैं हो गयी निश्चिंत।
नये क्लास में नये दोस्त मिले
अब चिन्ता का हुआ अंत।
पढ़-लिखकर बनूँगी,
मैं अच्छी इन्सान;
पूरी करूँगी सपने,
माँ-बाप के सारे अरमान।

खुशबू सिन्हा

कहानी

नये वर्ग का पहला दिन

सुबह-सुबह समीर अपने घर के पीछे बगीचे में बैठा आज के दिन के बारे में सोच रहा था। यों तो रंग-बिरंगे फूलों पर तितलियाँ और भौंरे मँडरा रहे थे। गुनगुना रहे थे। मस्त-मस्त हवाएँ भी बह रही थीं। पर उसका ध्यान आज इन पर चाहकर भी नहीं जा रहा था। अचानक उसके चेहरे पर सूर्य की लाल किरणें पड़ीं। उसे लगा जैसे वे उससे कह रही हों–'जाओ अब मुँह-हाथ भी धो लो, नहीं तो विद्यालय के लिए देर हो जाओगे। और वह गुदगुदा उठा।

समीर वहाँ से उठकर अपने घर के अंदर गया। "बेटा समीर?" उसकी माँ ने रसोईघर से पूछा, "हाँ माँ।" उसने जवाब दिया। "जल्दी से तैयार हो जाओ, विद्यालय जाने का समय हो रहा है। नयी कक्षा की शुरुआत आज से ही है न?" उसकी माँ ने आगे पूछा। "हाँ माँ समीर बोल पड़ा और वह नित्यक्रिया करके विद्यालय जाने के लिए तैयार हो गया, उसकी माँ ने उसे गरम-गरम नाश्ता परोसा। वह नाश्ता करके विद्यालय की ओर जाने लगा। रास्ते में तरह-तरह की कल्पनाएँ करते-करते विद्यालय पहुँचा। उसके पहुँचते ही प्रार्थना की घंटी बजी। वह अपनी नयी कक्षा के प्रवेश-द्वार को प्रणाम करते हुए अंदर गया। बस्ता रखा, फिर प्रार्थना की कतार में लग गया। प्रार्थना समाप्त होने के बाद सभी छात्रों ने अपनी-अपनी कक्षाओं में प्रवेश किया सभी एक दूसरे को देख रहे थे। कुछ नये चेहरे दिख रहे थे, और कुछ वही जो पहले थे। इतने में शिक्षक जी आए। सभी छात्रों ने खड़े होकर उनका अभिवादन करते हुए एक साथ कहा, "सुप्रभात सर"। "सुप्रभात बच्चो, बैठ जाओ" शिक्षक ने उन्हें बैठने का आदेश दिया। इसी बीच एक बच्चा शिक्षक से बोल पड़ा, "सर आपके जूते दो रंग के हैं क्या?" मास्टर जी आश्चर्य से हड़बड़ाकर अपने जूते देखने लगे। उनके जूते एक ही रंग के थे। सभी बच्चे ठठाकर हँस पड़े। मास्टर जी ने थोड़ा अंदर-ही-अंदर गुस्सा किया। उसी बीच से एक बच्चा बोला, "सर आज अप्रैल फूल है। माफ करेंगे।" बच्चे ने यह कह कान पकड़ लिए। सबके पास अपनी-अपनी नयी किताबें थीं, पर मात्र वे उन्हें उलट-पुलट कर देख ही रहे थे। समीर भी वही करता था। सबके मन में जिज्ञासा बढ़ी थी। सबको ऐसा लग रहा था, जैसे सारी किताबें आज ही देख डालेंगे। इसी बीच टन-टन-टन छुट्टी की घंटी बज गयी।

"अरे यार समीर, आज के वर्ग में तो बहुत मज़ा आया।" उसके मित्र ने समीर से कहा। "हाँ यार, मैं तो एकदम डरा-डरा –सा था। सोच रहा था– कैसे शिक्षक होंगे ?कैसी पढ़ाई होगी ?लेकिन सब कुछ अच्छा हुआ। पढ़ाई के साथ-साथ खेल भी था। और मज़ा भी आया।" समीर ने जवाब दिया। इसी तरह सभी बच्चे आपस में बातचीत करते चले जा रहे थे।

–प्रवीण कुमार
वर्ग–VI, हनी ड्यू प्वाइंट स्कूल

खेल

सिक्कड़ चोर

इस खेल में जितने चाहें उतने बच्चे खेल सकते हैं। इस खेल का नाम है–'सिक्कड़ चोर'। सभी बच्चे मैदान में आ जाएँ। कोई एक बच्चा चोर होगा और चोर का कहीं भी साइड में घर होगा। जो बच्चा चोर रहेगा वह बाकी सभी बच्चों को छोड़कर किसी एक को छूएगा। और, जिसको छूएगा उसे साथ लेकर अपने घर में वापस आएगा। जब तक वह दौड़कर अपने घर वापस नहीं आ जाता, तब तक बाकी बच्चे उन्हें दौड़कर पीटेंगे। फिर जो दोनों बच्चे चोर बने थे, वे एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर किसी को छूएँगे। ऐसे ही खेल आगे बढ़ता रहेगा। जब चोर बने बच्चों की लाइन ज्यादा लम्बी हो जाए, तो वे दो-तीन समूह बनाकर दौड़ सकते हैं। जो बच्चा अंत में बच जाएगा, यानी नहीं छूआ पाएगा, वह राजा होगा और वह जिस बच्चे को चोर बनाना चाहेगा चोर उसे ही बनायेगा।

मज़ा आया न। फिर तैयार रहना अगले खेल खेलने के लिए।

प्रस्तुति–तुलसी लवली

कुछ नया करें

टूटी-फूटी चूड़ियों से फोटो-फ्रेम

चूड़ियों से फ्रेम! ये कैसे? आप यहाँ यह सोच रहे होंगे न कि टूटी-फूटी चूड़ियों से फ्रेम कैसे बनाएँ। चूड़ियाँ टूट जाने पर हम उन्हें फेंक देते हैं, लेकिन आपको पता है– हम उन्हीं चूड़ियों से बहुत ही सुन्दर फोटो-फ्रेम बनाना सीखाते हैं।

सामग्री–फोटो, जितने आकार में फोटो हैं, उससे बड़े आकार में काटे हुए एक कुट, गोंद, टूटी हुई चूड़ियाँ

विधि–सबसे पहले हम फोटो से बड़े आकार में कटे हुए कुट को लेते हैं। फिर हम फोटो को कुट के बीचों-बीच चिपका देंगे, अब फोटो के बाहरी छोर पर टूटी चूड़ियाँ रेखा बनाकर चिपका दें। अब कुट के आखिरी छोर को भी चूड़ियों के टुकड़ों से रेखा में सजा दें। अब फ्रेम की खाली जगहों को आप अपने तरीके से सजा सकते हैं। आपका प्यारा फोटो-फ्रेम तैयार हो गया।

प्रीति कुमारी वर्मा
बॉकीपुर गर्ल्स हाई स्कूल।

गजब का रोग

मूर्ख दिवस साल में एक बार आता।
अच्छे-अच्छों को मूर्ख बना जाता;
तुम यह सोच मत शरमाना,
इसके पीछे है सारा जमाना।
इस दिन का माहौल होता गरम,
इसके प्रभाव से सब हो जाते नरम।
छोटा मूर्ख बनाओ, चाहे बनाओ बड़ा,
हँसकर हो लोट-पोट, जो था खड़ा।
किसी को यंत्र से बनाते हैं मूर्ख,
किसी को मंत्र से बनाते हैं मूर्ख
बातों-बातों में ऐसा मूर्ख बनाओ,
मूर्खों का नाम अमर कर जाओ।
आज मत भूलना मूर्ख बनाना,
गरम चाय में नमक मिलाना,
खट्टा और मीठा नया बहाना,
चुल्लू भर पानी में डूब जाना।

–मुनटुन राज

बूझो-बुझौवल

1. कभी न टूटे झुन-झुनमा पहाड़
2. बाहर से रंग हरा
   अंदर से मैं लाल
   गर्मी में प्यास बुझाता
   क्या है मेरा नाम?
3. फले न फूलाय,
   भर-भर टोकरी रोज फेंकाय

बबलू बबली के चुटकुले

- बबलू-(बबली से)-तुझे ये छोटा मैडल क्यों मिला ?
  बबली–गाना शुरू करने की खुशी में।
  बबलू–और ये बड़ा मैडल।
  बबली–गाना बंद करने के लिए।
- बबलू-(घड़ी दुकानदार से)-यह घड़ी सुधारने का क्या लोगे ?
  दुकानदार–जितने में ली थी उसका आधा
  बबलू–मैंने दो घूँसे मारकर ली थी। अब एक घूँसा खाने के लिए तैयार हो जाओ।
- बबलू–बबली बताओ नेपाल दूर है या चाँद?
  बबली–नेपाल
  बबलू–कैसे?
  बबली–क्योंकि चाँद तो दिखाई देता है, लेकिन नेपाल यहाँ से दिखाई नहीं देता।
- बबलू–मुझे तंग न करो। मेरे दिमाग में आग लगी है।
  बबली–तभी तो मैं कहूँ कि कुछ जलने की गंध कहाँ से आ रही है।
- शिक्षक–बबलू–तू बहुत बड़ा गधा है।
  बबलू–नहीं सर! बड़े तो आप हैं मैं तो छोटा हूँ।
- बबली–(बबलू से)–कल तूने बाग में पानी क्यों नहीं दिया?
  बबली–पानी कैसे देता?कल तो पानी बरस रहा था।
  बबली–तो छाता लगाकर देता।

आगे बढ़ना है

है सोचा मैंने जीवन में,
अब तो कुछ करना है।
पढ़-लिखकर हमें अब,
आगे-ही-आगे बढ़ना है।
रुकना है न झुकना है,
हर बुराई से लड़ना है।
कदम-कदम पर मिलेंगे काँटे,
साहस नहीं हारना है।
रोक-टोक ना कोई बंदिश,
ऊँची उड़ान भरना है।
सोच लिया है सोच लिया
आगे-ही-आगे बढ़ना है।

–विकास कुमार भक्त
रा.म.वि. पहाड़ी बाल केन्द्र, पटना

कहानी

जादुई कविता

दो दिन से बहुत परेशाान रहता था । उसकी परेशानी का कारण स्कूल में होने वाली दौड़-प्रतियोगिता थी। वह पढ़ाई में जितना तेज था, उतना ही तेज दौड़ में था । प्रतियोगिता के लिए उसने खूब तैयारी की थी। परंतु न जाने क्यों उसे डर सता रहा था। उसे लग रहा था कि वह दौड़ में हार जाएगा। वह सोचता कि मुझे प्रतियोगिता में भाग नहीं लेना चाहिए। मैं हार गया तो लोग मुझ पर हँसेंगे-यही सोचकर वह परेशान रहता था। वह रोज की तरह पढ़ने बैठा। लेकिन उसे पढ़ाई में मन नहीं लगा। उसे तो बस हार का डर सता रहा था कि दौड़ में हार जाएगा। आज रवि के नानाजी घर आए थे। रवि के नानाजी शहर के जाने-माने कवि थे, रवि को शांत बैठा देखकर बोले, "बेटा रवि, तुम बड़े उदास दिख रहे हो, क्या बात है?" रवि ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं है।" नानाजी ने प्यार से कहा कि तुम मुझे बता सकते हो। नानाजी की बात सुनकर रवि से रहा न गया। उसने अपने डर की बात बतायी। नानाजी सारी बातें सुनकर बोले, "बस इतनी-सी बात अच्छा बताओ कि तुमने दौड़ने की तैयारी की है ?" "हाँ, मैंने काफी तैयारी की है।" फिर नानाजी ने कहा कि मैं तुम्हें एक कविता लिखकर दे रहा हूँ। यह जादुई कविता है, इसे याद कर लेना और प्रतियोगिता में दौड़ने से पहले एक बार पढ़ लेना। फिर देखना इसका चमत्कार, तुम फर्स्ट आओगे। यह कहकर नानाजी ने एक कागज पर रवि को कविता लिखकर दी, और कहा, ''इसे पढ़कर सुनाओ।'' रवि धीरे-धीरे कविता पढ़ने लगा। अन्दर से विश्वास हो, मन से न निराश हो, लक्ष्य अपना पाओगे, तुम सफल हो जाओगे। शाबाश! रवि इसे याद कर लो। रवि नानाजी को धन्यवाद देकर अपने कमरे में चला गया। अगले दिन रवि तैयार होकर मम्मी-पापा और नानाजी का आर्शीवाद लेकर प्रतियोगिता के लिए स्कूल चला गया। कुछ देर में प्रतियोगिता आरंभ हुई। रवि ने कविता पढ़ी और दौड़ना शुरू किया और यह क्या रवि फर्स्ट आया। उसे प्रथम पुरस्कार के रूप में गोल्ड मेडल मिला। वह पुरस्कार लेकर घर पहुँचा। सबसे पहले वह नानाजी के पास गया। वह बहुत खुश हुए और बोले, "शाबाश रवि, तुमने तो कमाल ही कर दिया।" "मैंने नहीं नानाजी, बल्कि जादुई कविता ने।" नानाजी ने कहा, "नहीं रवि, वह जादुई कविता नहीं थी, वह तो एक सामान्य कविता ही थी।" रवि, "–तो मैं जीत कैसे गया?" नानाजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "असली बात तो यह है, रवि कि तुम्हारे अंदर आत्मविश्वास की कमी थी, तुम्हें अच्छे अभ्यास के बाद भी हार का डर सता रहा था, अत: मैंने साधारण-सी कविता को जादुई कविता बताकर तुम्हारे अंदर आत्मविश्वास जगाया क्योंकि इससे बड़ा कोई दूसरा जादू नहीं होता। मुझे खुशी है कि वह तरीका सही साबित हुआ।

–मानसी

खोजबीन

दोस्तो,

आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि जिस खूबसूरत आर-पार वाले साबून को आप देखते हैं, वह किसी कारखाने की उपज नहीं है और न–ही इसके पीछे वैज्ञानिक या रिसर्च टीम रही है, बल्कि इसे तैयार किया है एक एंड्रयू नामक नाई ने। जिसने 23 साल की उम्र में नाई की दुकान खोली थी। वे ग्लिसरीन और फूलों की खुशबू से एक पारदर्शी साबून बनाने में कामयाब हुए। 1789 ई० में पीयर्स साबून पहली बार बाजार में उतरा तथा पीयर्स दुनिया का पहला रजिस्टर्ड और सबसे पुराना मौजूदा ब्रांड भी है। कोई भी ब्रांड नकल से नहीं बच सकता। पीयर्स को भी इसका सामना करना पड़ा। इससे बचने के लिए एंड्रयू हर पैकेट पर अपना सिग्नेचर करने लगे। एंड्रयू का निधन 1854 ई० में हुआ फिर उनके दामाद टॉमस जे बैरेट ने अपनी प्रचार-तकनीक से इसे अंतर्राष्ट्रीय ब्रांड बना दिया। 1971 ई० में यूनिलीवर ने इसे खरीदा। भारत में पीयर्स 1902 ई० में आया। इसमें ग्लिसरीन साबून के अंदर ही रह जाती है और इसी कारण से यह पारदर्शी हो जाता है। खास बात कि पीयर्स 1 दिन या 1 घंटे में तैयार होने वाला साबून नहीं, बल्कि इसकी प्रक्रिया बहुत लंबी है। एक पीयर्स साबून तैयार होने में करीब 70 दिन का वक्त लगता है। तमाम ब्रांड आने के बावजूद करीब 225 साल पुराना यह ब्रांड अब भी बाजार में टिका हुआ है। यह अमीरों का ब्रांड और दिखने में सबसे अलग है। इसे उस दौर में खूबसूरती का सिंबल माना गया था।

और सबसे ख़ास और रोचक बात तो यह है दोस्तो कि पीयर्स सिर्फ हमारे देश भारत में ही बनता है, और यहीं से पूरी दुनिया में भेजा जाता है। इस नाजुक से साबून, जिसे देखते ही बच्चों का दिल बोल उठता है, पीयर्स इज ओन्ली माइ, क्योंकि इसके जैसा दूसरा कोई नहीं।

–अतुल रॉय
वर्ग–नवम्, संत रवीन्द्र भारती स्कूल, पटना

हाइकु

दोस्तो, आपके मन में यह सवाल उठता होगा कि भई यह 'हाइकु' क्या है ?तो, यह जापान की एक लघु कविता है। यह केवल तीन पंक्तियों का होता है। इसकी पहली पंक्ति में पाँच वर्ण, दूसरी पंक्ति में सात वर्ण और फिर तीसरी पंक्ति में पाँच वर्ण होते हैं। जैसे–

(1) सारे चेहरे
पड़े सुर्ख, मैंने जो
बनाया मूर्ख।

(2) एक ज़िन्दगी
इसमें न भरना
कभी गन्दगी।

(3) मोर-सी नाचूँ
झमाझम बारिश
मेरी ख्वाहिश।

(4) कालातीत था
भूला दिया समझ
कि अतीत था।

(5) सदानीरा हैं
सुख और दु:ख भी
इन नैनों के।

(6) बाग की कली
कितनी खूब खिली
खिलखिलाती।

–प्रियंतरा भारती
वर्ग-V

सबको उल्लू बनना है

परीक्षाएँ तो हो गईं खत्म अब,
अप्रैल फूल का मौसम है छाया।
सबको उल्लू बनाने में अब,
बड़ा मज़ा है आया।
एक ही रंग के जूते हों पर,
दो रंग उन्हें बतला दे;
इसी तरह की बातें करके,
हम उन्हें चौंका दें।
सबको उल्लू बनाना है,
रुठे मन को हँसाना है।
पर एक बात का ध्यान हैं रखना,
किसी का दिल न दुखाना है।
किसी को भी बुरा लगे तो,
कान पकड़ सॉरी है बोलना;
लेकिन उल्लू बनाना दोस्तो,
कभी मत तुम छोड़ना।

– रौशन पाठक
वर्ग-VIII

नन्हें कलाकार

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

कैमरे में किलकारी

बिहार दिवस में फोटो प्रदर्शनी देखते शिक्षा मंत्री

संस्कृति कार्यक्रम प्रस्तुति

नृत्य की प्रस्तुति

पुस्तक से करें दोस्ती

करेंगे पुस्तक से दोस्ती,
तो महान बन सकते हैं;
इंसान को इंसान समझेंगे,
तो भगवान बन सकते हैं।
पुस्तक से अच्छा दोस्त,
कोई नहीं हमारा;
इससे जिसने नफरत की,
अपना भविष्य बिगाड़ा।
पुस्तक में हर ज्ञान भरा है,
जिसने इसको सँवारा;
भेद-भाव का तर्क नहीं यह,
हमारा या तुम्हारा।
हम पढ़ेंगे व पढ़ाएँगे,
सबको यही बताएँगे
पुस्तक अपना सच्चा साथी,
सबको हम समझाएँगे।

–तुलसी लवली

प्रबंध-समिति-बैठक

10 मार्च, 2016

दोस्तो,

जब भी हमारे साथ कुछ भी होता है, तो मन चाहता है कि ये बात किसी से बता दें। आज मैं भी आप सबसे अपना एक अनुभव साझा करना चाहती हूँ। वो अनुभव है प्रबंध समिति बैठक का। अब आप सोच रहे होंगे कि ये प्रबंधक समिति की बैठक क्या होती है? पता है, हमारी किलकारी के साथ शिक्षा विभाग की हर छः माह पर एक बैठक होती है, जिसमें किलकारी की आने वाली योजनाएँ और की गई गतिविधियाँ साझा की जाती हैं। हर बार की तरह इस बार भी दो बाल सहयोगियों के रूप में मैं प्रियंतरा भारती और मेरी दोस्त, हेमा शामिल थे। बड़ों में हमारे बीच थें (प्रधान सचिव) धर्मेन्द्र गंगवार सर, यूनिसेफ की ओर से निपूर्ण गुप्ता दी, ऊषा किरण खान मैम, और किलकारी की निदेशिका ज्योति दीदी के साथ ही जितेन्द्र भईया और पंकज सर। सचिवालय पहुँचने तक मन में जरा भी डर नहीं था मगर जैसे ही मीटिंग की शुरुआत हुई । दिल घबराने लगा। मैं और हेमा, हम दोनों के ही मन में कई सवाल उठने लगे कि सर हम दोनों से क्या पूछेंगे और हम उनके क्या जवाब देंगे? बड़े भारी-भारी सवाल और जवाब आ रहे थे । मगर हुआ बिल्कुल उल्टा। उन्होंने तो बस यही पूछा कि ज़रा मुझे भी बताओ कि आखिर तुमने इस दौरान क्या-क्या नया किया है, क्या-क्या नया सीखा?मैंने उन्हें बहुत कुछ बताया और उन्होंने भी बहुत कुछ पूछा, जैसे कि तुम्हारे ख्याल से किलकारी में क्या और भी कुछ सुधार होने चाहिए?तुम्हारे पुस्तकालय में किस-किस तरह की किताबें आती हैं?तुम वहाँ सीखती कैसे हो?मैंने उन्हें अपनी लेखन की गतिविधियों के बारे में बताया। पुस्तकों में कहानियाँ, चुटकुले, कविता, उपन्यास और भी कई पुस्तकों की जानकारी दी। उन्होंने सुझाव दिया कि पुस्तकालय में कोर्स और सृजनात्मकता की भी किताबें आनी चाहिए। मेरी दोस्त हेमा ने भी अपने नाटक-विधा की गतिविधियों को साझा किया। मज़ा आया। धर्मेन्द्र सर और अन्य भईया दीदियों से मिलकर लगा ही नहीं कि हमारे सामने कई बड़े-बड़े पदाधिकारी बैठे हुए हैं सबने हमें यूँ सुझाव दिया, यूँ हमसे बातचीत और हँसी-ठिठोली की जैसे वे सब हमारे दोस्त ही हों कोई अनजान नहीं। अच्छा लगा बल्कि बहुत अच्छा लगा प्रबंध समिति के बैठक में। बताना तो बहुत कुछ चाहती हूँ पर बयाँ नहीं कर सकती। आप भी अगर मेरी जगह होते तो बिल्कुल ऐसा ही महसूस करते। मन में बताने के लिए उत्सुकता। पर बयाँ करने को शब्द ही नहीं। बैठक बोरीयत भरी तो बिल्कुल भी नहीं थी और जानते हैं कभी-कभी हम बच्चों का मन सोचता ही है कि गणित के बड़े कठिन सवाल, समझ में ना आने वाली कठीन-सी बात, उल्टी हो जाये तो आराम से समझ में आये। वहाँ भी हम बच्चों को बताया गया कि अगर कभी-कभी हम चीज़ों को उल्टा भी कर दें तो वह एक सृजन हो जाता है। अगर कभी हमें समस्याओं का हल ना मिले तो हम उसे उल्टा करके देखें तो भी उसका हल निकल सकता है। अच्छा चलो, मैंने तो अपना ये ख़ास अनुभव तुमसे बातों-ही-बातों में बता दिया। और तुम, तुम्हारा ख़ास अनुभव क्या है?

–प्रियंतरा भारती

लघुकथा

दीपक इधर-उधर सड़कों पर कूड़ा-कचरा चुनता था। उसके माता-पिता भी वही काम करते थे। दीपक के माता-पिता हमेशा सोचते थे कि मेरा बेटा स्कूल जाए। लेकिन सिर्फ सोचकर ही रह जाते थे। दीपक के पिताजी परेशान थे। वे सोच रहे थे यह हमारे बच्चे का भविष्य कैसा होगा। कहीं मेरे ही जैसा तो नहीं.....? उनको यह परेशानी खाए जा रही थी। वे सोचते-साचते घर आ रहे थे। अचानक उन्हें ठेस लग गयी और वे धड़ाम! से गिर पड़े। कुछ लोगों ने मिलकर उन्हें उठाया। सभी लोग चल पड़े। लेकिन एक व्यक्ति वहीं रुका रहा। दीपक के पिताजी ने अपनी बात उन्हें बतायी। वे बोले, "आप अपने बच्चे को स्कूल भेजिये। जो खर्चा होगा, हम देंगे।" दीपक का पिताजी को ऐसा लगा कि उनके सामने साक्षात् भगवान खड़े हैं। और कल से दीपक विद्यालय जाने लगा।

–पूजा कुमारी
वर्ग–VII th

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

–बाल सम्पादक मंडल

अल्हड़ बचपन

दिल में मस्ती हरकतों में शरारत,
बदमाशी में थी जहाँ महारत;
कुछ गुदगुदाएँ तो कुछ आँखें डबडबा दे,
अल्हड़ बचपन को अल्हड़ सी यादें।
प्रार्थना-सत्र की तो लंबी कतार,
अंतिम घंटी का होता था जहाँ इंतजार;
एक-से लिबास में लगते थे सीधे-सादे,
अल्हड़ बचपन की अल्हड़ सी यादें।
तुरन्त में दोस्ती, तुरंत तकरार,
थोड़ी नोक-झोंक, मगर बहुत-सा प्यार;
लड़ाई-झगड़े को जो पल में भुला दें,
अल्हड़ बचपन की अल्हड़ सी यादें।
दुखों को आधी-आधी बाँट लेते थे,
खुशियों को दिल से साट लेते थे,
उन खोए लम्हों को कोई लौटा दे,
अल्हड़ बचपन की अल्हड़ सी यादें।।

–आकाश कुमार

गर्मी का मौसम आया

गर्मी का मौसम है आया,
इसने खूब पसीना बहाया।
आम का दिन साथ लाया,
खूब चटकारे लेकर खाया।
ठंडे पानी से खूब नहाया,
मुझमें नया जोश है आया।
लीची भी पेड़ों पर आयी,
खाया-पिया, मौज़ उड़ायी।
दोस्तों को भी यह बतलाया,
एक अप्रैल को मूर्ख बनाया।
सबने अपना खेल दिखाया,
खुद को ही सबने बहलाया।
खूब मज़ा हमने पाया,
गर्मी का मौसम है आया।

बंटी कुमार

इस अंक के प्रतिभागी–
शांति, मोहिनी, पिन्टू, आकाश, साहिल, विकास, बंटी, सोनी, ममता, जूही, शशि, सुदामा, मानसी, पिंकी, पूजा, अंशू, प्रीति, रिंकी, लक्ष्मी, खुशबू, प्रियंका, अतुल, गौरव, श्याम, सन्नी
बाल सम्पादक-अभिनंदन, सम्राट, प्रवीण, प्रियंतरा, तुलसी, मनीष, मुनटुन
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
कार्यकारी सम्पादक–राजीव रंजन श्रीवास्तव, विशेष सहयोग-वीरेन्द्र कु. भारद्वाज, संगीता दत्ता
संयोजक– सुधीर कुमार
कार्यालय– बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब बूझो-बुझौवल

परछाई, तारबूज, कूड़ा-कचरा
माथापच्ची - नारयिल

वेबसाइट: www.kilkaribihar.org

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspot.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar